Research Paper
E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

श्रीलंका से भारत के ऐतिहासिक संबंध

जगत नारायण शोधार्थी (इतिहास), टांटिया विश्वविद्यालय, रीको, श्रीगंगानगर.

ABSTRACT:

दक्षिण विश्व के देशों में श्रीलंका का विशेष महत्व है । भारत के दक्षिण में हिंद महासागर में भारत से ही लगा हुआ एक द्वीप है जिसे भारतीय साहित्य में विविध नाम से संबोधित किया गया है, जैसे ताम्रपर्णी, तंबपन्नि, सिंहल देश इत्यादि। श्रीलंका से भारत का संबंध अत्यंत प्राचीन समय से रहा है, जैसे रामायण काल से लेकर चोल साम्राज्य तक श्रीलंका का संबंध प्राचीन तथा पूर्व मध्यकाल में भारत से रहा है जो कि भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। रामायण काल के पश्चात मौर्य वंश के शासक सम्राट अशोक, संगम युग के चोल वंश के शासको के समय, गुप्तवंशी सम्राट समुद्रगुप्त, राष्ट्रकूट वंशी शासक गोविंद तृतीय और अंततः चोल वंश के विभिन्न शासकों से भी श्रीलंका के ऐतिहासिक राजनीतिक तथा धार्मिक संबंध रहे हैं। इस प्रकार भारत के श्रीलंका से संबंध पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक तथा राजनीतिक पूर्वक रहे हैं ।

KEYWORDS:

दक्षिण विश्व भारतीय साहित्य रामायण संगम युग ऐतिहासिक संबंध ।

प्रस्तावना

दक्षिण विश्व के देशों में श्रीलंका का विशेष महत्व है। श्रीलंका भारत के दक्षिण में हिंद महासागर में भारत से ही लगा हुआ एक द्वीप है जिसे भारतीय साहित्य में विविध नामो से संबोधित किया गया है जैसे ताम्रपर्णी, तम्बपंन्नि, सिंहल देश इत्यादि। श्रीलंका की भारत से दूरी मात्र 32 किलोमीटर है 1972 ई तक इसका नाम सीलोन था जिसे बदलकर लंका तथा 1978 ईस्वी में इसका नाम बदलकर श्रीलंका कर दिया गया।

श्रीलंका का भारत से प्राचीन काल से ही अटूट संबंध रहा है अतः भारत तथा श्रीलंका के मध्य ऐतिहासिक संबंधों को उक्त प्रकार से समझा जा सकता है:

वाल्मीकि कृत रामायण के अनुसार भारत तथा श्रीलंका के संबंध रामायण काल से ही माने गए हैं श्रीलंका के इंटरनेशनल रामायण रिसर्च सेंटर और वहां के पर्यटन मंत्रालय ने मिलकर रामायण से जुड़े ऐसे 50 स्थल ढूंढ लिए हैं जिनका पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक महत्व है। और जिनका रामायण में भी उल्लेख मिलता है और इन सभी 50 स्थलों के साक्ष्य भी पेश किए गए हैं।

सम्राट अशोक मौर्य और श्रीलंका से संबंध (273 ईसा पूर्व से 236 ईसा पूर्व)

सिहाली ग्रंथ महावंश के अनुसार मौर्य शासक अशोक ने सर्वप्रथम अपने पुत्र महेंद्र तथा कुछ अन्य दूत जैसे भद्रशाल संबल, उत्तिय, इट्टय को श्रीलंका भेजा ।

उसे समय महेंद्र विदिशा में रह रहा था और यही से श्रीलंका गया इसके कुछ समय पश्चात संघमित्रा भी शंका गई जो अशोक की पुत्री थी।

अशोक समय संघमित्रा को छोड़ने तामृलिप्ती बंदरगाह आया था, बौद्ध धर्म के प्रचार में अशोक को सर्वाधिक सफलता श्रीलंका में मिली, यह श्रीलंका में बौद्ध धर्म का पर्दापण था, महेंद्र ने अपने साथियों के साथ श्रीलंका के शासक" तिस्स" सहित उसके 40000 साथियों को बौद्ध धर्म में दीक्षित कर दिया। तिस्स ने अशोक की भांति देवनापीय की उपाधि धारण की। महावंश के अनुसार तिस्स ने अपने भतीजे अरिट्ठ के नेतृत्व में एक शिष्मंडल अशोक के पास भेजा था। अशोक के दूसरे तथा तेरहवें अभिलेखों से पता चलता है कि अशोक ने अपने धर्म प्रचारकों से श्रीलंका में चिकित्सालय, कूप और सड़कें आदि निर्मित करवाई।

संगम युग में भारत के श्रीलंका से संबंध (100 ई से 300 ई तक)

भारत के सुदूर दक्षिण में 100 ई से 300 ई तक के समय काल में अनेक राज्य विराजमान थे जिनमें चेर, चौल और पांड्य राज्य अत्यंत महत्वपूर्ण थे। इस युग को संगम युग के नाम से जाना जाता है। संगम युग के चोल वंश के शासक करीकाल (190 ई) के समय काल में सिंहल देश के शासक एलारा को परास्त किया तथा सिंहल से 12000 युद्धबंदियों को लाकर पुहार बंदरगाह के निर्माण में लगा दिया जिसे कावेरिपट्टनम भी कहा जाता है। कावेरिपट्टनम संगम युग के चोल वंश का प्रमुख बंदरगाह था।

गुप्त वंश के समय श्रीलंका से भारत के संबंध

गुप्त वंश के शासक समुद्रगुप्त(335 ई से 375 ई) के समय श्रीलंका का शासक मेघवर्ण अर्थात मेघवर्मन था चीनी स्रोतों के अनुसार मेघवर्ण ने समुद्रगुप्त के पास दो भिक्षुओं का एक दूतमंडल भेजा था, जिसमें एक दूत मेघवर्ण का भाई था। चीनी लेखक वांग ह्वेवशी (Wang -hiuen-Tse) के ग्रंथ हिंग- चिओन (Hing-Tchon) से ज्ञात होता है कि मेघवर्ण ने बोधगया के बुद्धि वृक्ष के उत्तर में लंका के बौद्ध भिक्षुओं के लिए एक बिहार का निर्माण समुद्रगुप्त की अनुमति से किया था। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने उसे विहार को महाबोधि संघाराम का नाम दिया।

राष्ट्रकूट वंश के समय श्रीलंका से संबंध (650 ई से 1000 ई)

राष्ट्रकूट वंश के शासक गोविंद तृतीय (793ईसे 814 ई) के समय के संजन लेख से ज्ञात होता है कि गोविंद की शक्ति से भयभीत होकर श्रीलंका के शासक ने गोविंद की अधीनता स्वीकार करते हुए एक दूतमंडल गोविंद के दरबार में भेजा था तथा श्रीलंका के शासक ने अपनी तथा अपने मंत्री की मूर्तियां भेजी गोविंद ने उन मूर्तियों को विजय स्मारक के रूप में मालखेड़ के एक शिवालय के सम्मुख स्थापित करवाया

चोल राजवंश (850 ई - 1120 ई से श्रीलंका से भारत के संबंध

राज राज प्रथम/अरिमोलीवर्मन (985 ई - 1014 ई)

तंजौर अभिलेख से ज्ञात होता है कि राजराज प्रथम ने सिंहल नरेश महेंद्र या महिंद पंचम को परास्त कर उत्तरी श्रीलंका पर अधिकार कर लिया चोलो ने सहल की राजधानी अनुराधापुर को ध्वस्त कर वहां पोलोन्नरुव को राजधानी बनाया तथा इसका नाम जननाथमंगलम रखा तथा उत्तरी सिंहल के संपूर्ण प्रदेश को मामूंडीशोल मंडलम नाम दिया गया। राजराज ने सिंहल में एक अभिलेख लिखवाया तथा शिव मंदिर बनवाया तिरुवालगांडू ताम्रपत्र में इस अभियान का काव्यात्मक विवरण इस प्रकार मिलता है-राम ने बंदरों की सहायता से सागर के आर पार एक पुल बनाया तथा बड़ी कठिनाई से श्रीलंका के राजा रावण का वध किया किंतु यह शासक राम से भी अधिक प्रतापी सिद्ध हुआ क्योंकि उसकी शक्तिशाली सेना ने जलपोतों से समुद्र पार किया तथा लंका के राजा को हरा दिया।

राजेंद्र चोल (1014 ई -1044 ई)

राज राज प्रथम ने केवल उत्तरी श्रीलंका को विजय किया था परंतु उसके पुत्र राजेंद्र प्रथम ने 1017 -1018ई के मध्य श्रीलंका पर आक्रमण कर वहां के शासक महेंद्र पंचम को पूर्णतः परास्त कर बंदी बना लिया तथा चोल राज्य की कारागार में डाल दिया। 12 वर्ष के पश्चात इसकी कारागार में ही मृत्यु हो गई। करंदई ताम्रपत्र के अनुसार राजेंद्र ने लंका के राजा को पूर्णतया पराजित कर दिया।

श्रीलंका के ग्रंथ महावंश के अनुसार राजेंद्र ने संपूर्ण श्रीलंका पर अधिकार कर लिया तथा

महेंद्र पंचम के पुत्र कस्सप ने 6 माह के कड़े विरोध के पश्चात सिंहल के दक्षिणी भागों को पुन: अपने अधिकार में कर लिया।

राजाधिराज प्रथम (1044ई-1052 ई)

राजेंद्र प्रथम के पश्चात उसका पुत्र राजाधिराज प्रथम चोल साम्राज्य का उत्तराधिकारी हुआ इसके समय में श्रीलंका में विद्रोह हो गया राजाधिराज ने कठोरता पूर्वक इस विद्रोह का दमन कर दिया और श्रीलंका की राज माता की नाक काट ली तथा लंका पर पूर्ण अधिकार कर लिया।

वीर राजेंद्र (1064 ई 1070 ई)

वीर राजेंद्र के समकालीन श्रीलंका नरेश विजयबाहू प्रथम था जो की चोलो से पराजित होकर वातगिरी में शरण लेने हेतु विवश हुआ।

कुलोतुंग प्रथम (1070 ई 1120 ई)

यह मूलतः पूर्वी चालुक्य नरेश राजराज का पुत्र था इसका मूल नाम राजेंद्र था जो कुलोतुंग प्रथम के नाम से चोल सिंहासन पर बैठा इसके समय में चोल साम्राज्य में चारों तरफ अराजकता तथा अशांति फैली हुई थी अतः इसी का लाभ उठाते हुए तत्कालीन श्रीलंका के नरेश विजयबाहू ने 1070 ईस्वी में पोलनरूव तथा अनुराधापुर में चोलों को पराजित किया, तत्पश्चात उसने चोल सेना को लंका से खदेड़ दिया और अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी 1072 -1073 ईस्वी में उसने स्वतंत्र राजा के रूप में अपना राज्याभिषेक करवाया

प्रारंभिक शत्रुता के पश्चात कुलोतुंग ने लंका नरेश विजयबाहु से मित्रता कर ली और अपनी पुत्री का विवाह उसके एक राजकुमार से कर दिया

निष्कर्षत -रामायण काल से लेकर लगभग 12वीं शताब्दी तक मौर्य वंश, संगम युग, गुप्त युग, राष्ट्रकूट राजवंश, चोल राजवंश आदि से श्रीलंका के भारत से राजनीतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक संबंध रहे अंततः भारत तथा श्रीलंका के मध्य 12वीं शताब्दी तक आते-आते चोल वंश के उतरवर्ती शासको से कुछ संघर्ष के पश्चात वैवाहिक तथा मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हो गए।

REFERENCES

1. श्रीवास्तव, के. सी., प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति. इलाहाबाद : यूनाइटेड बुक डिपो

2. पाण्डेय विमलचंद्र. (2010): प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास (भाग 1 व 2). इलाहाबाद : सेंट्रल बुक डिपो

3. कौशाम्बी, दामोदर धर्मानन्द. प्राचीन भारत की सभ्यता एवं संस्कृति. झा, द्विजेंद्रनारायण. कृष्ण मोहन माली. प्राचीन भारत का इतिहास. दिल्ली विश्वविद्यालय : हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय

4. महाजन, वी. डी. प्राचीन भारत. नई दिल्ली : एस. चांद एंड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड